Krishna Nand B.A III Hons (3) Purposive sampling (continue)

(iii) कुछ शोधकर्ता मनोविज्ञानियों द्वारा इस प्रतिचयन तकनीक की आलोचना इस लिए भी की जाती है कि इस प्रतिदर्श का प्रतिनिधिक होने के दावा का आधार शोधकर्ता का अति आत्मविश्वास है। परन्तु आलोचकों के मतानुसार इस तकनीक से प्राप्त प्रतिदर्श जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व कर पाने में सफल नहीं है।

(iv) कुछ आलोचकों का मानना है कि सही प्रशिक्षण के अभाव में शोधार्थी द्वारा चयनित प्रतिदर्श में कई प्रकार की कमी रह जाती है। फलतः अध्ययन दोषपूर्ण रह जाता है। कुछ अन्य आलोचकों का मत है कि इस तकनीक को प्रयोग में लाने के लिए शोधार्थी को व्यापक एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता होती है। कभी-कभी इस विस्तृत जानकारी के अभाव में प्रतिचयन दोषयुक्त रहता है। फलस्वरूप प्राप्त परिणाम में विश्वसनीयता की कमी पाई जाती है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद यह तकनीक कम खर्चीली तथा कम श्रमसाध्य होने के कारण मनोविज्ञान के साथ-साथ अन्य सामाजिक विज्ञानों में काफी प्रचलित है। राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र में इस प्रतिचयन प्रविधि का उपयोग बहुत अधिक प्रचलित है।

The End